पानी खरीदकर काम चलाना पड़ा।

लाडनूं. सुधर्मा सभा में जैन व इस्लाम सम्मेलन को सम्बोधित करते आचार्य महाश्रमण व मंचस्थ अन्य अतिथि।

'जैन व इस्लाम धर्म में हैं कई समानता'

लाडनूं. आचार्य महाश्रमण ने कहा कि भारत में भाषा, धर्म, रहन-सहन, खान-पान में विभिन्नता होने के बावजूद एकता मौजूद है। जैन व इस्लाम धर्म में बहुत सी बातों में समानता मिलती है। धर्म का एक रूप अहिंसा है। अहिंसा व्यापक तत्व है। धर्मग्रंथों में अहिंसा की व्याख्या मिलती है। वे रविवार को नूर फाउण्डेशन व जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में सुधर्मा सभा में आयोजित जैन-इस्लाम धर्म सम्मेलन में अम्नोशांति और भाइचारे विषय पर सम्बोधन दे रहे थे।

महाश्रमण का कहना था कि जिस व्यक्ति के मन में हिंसा, घृणा आदि है वह व्यक्ति धर्म से दूर है। जैन धर्म का उल्लेख करते हुए कहा कि जैन धर्म में अहिंसा पर सूक्ष्मता से विचार किया गया है। उनका कहना था कि जैन धर्म में साधु समाज के लिए नियम निर्धारित किए गए है।

मृत्यु के बाद पुर्नजन्म

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन धर्म आत्मवाद पर आधारित धर्म है। जैन धर्म मृत्यु के बाद पुर्नजन्म को मानता है। लोभ, माया, मोह आदि को पुर्नजन्म का कारण बताया। उनका कहना था कि मोक्ष नहीं होने तक हमारी आत्मा अनन्त काल तक मौजूद रहती है। पुर्नजन्म से मुक्ति के लिए सम्यक ज्ञान व चरित्र की आराधना एकमात्र उपाय बताया। आचार्य महाश्रमण ने कर्मवाद का सिद्धांत जैन धर्म ने दिया है। इसे एक पंक्ति के माध्यम से समझाया कि जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा। महाश्रमण ने कहा कि इस्लाम में भी संयम, अहिंसा की बात कही गई है। इंसान से प्रेम करने वाले से खुदा भी मोहब्बत करता है। उन्होंने विभिन्न धर्मों में मैत्री पर जोर दिया।

हिन्दुस्तान सूफी संतों का देश

विशिष्टअतिथि दीवान सैयद सौहलत हुसैन दरगाह ख्वाजा गरीब नवाज अजमेर सैयद गयासुद्दीन ने कहा कि हिन्दुस्तान सूफी संतों का देश रहा है। ख्वाजा गरीब नवाज हिन्दू व मुस्लिम एकता का प्रतीक रहे हैं। मुफ्ती फय्याज अहमद ने बताया कि जय जिनेन्द्र का अर्थ स्वयं पर नियंत्रण करना है। मुख्य अतिथि वक्फ बोर्ड के चेयरमैन लियाकत अली ने कहा कि भाषाओं के अलग-अलग होने के बावजूद हम सब एक हैं, इस्लाम का अर्थ ही अम्नोशांति है। इस मौके पर पालिकाध्यक्ष बच्छराज नाहटा व मुख्य शहर काजी अय्यूब अशरफी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।